Date :- 12/05/2020

नाटक के प्रकार

→ भरत मुनि के अतिरिक्त अग्नि पुराण में भी नाटक के भेद बताये गये हैं। अग्नि पुराण में नाटक को प्रकीर्ण कहा गया है। इसके निम्न भेद हैं - नाटक, प्रकरण, डिम, ईहामृग, समवयकार, प्रहसन, व्यायोग, भाण, वीथी, अंक, त्रोटक, नाटिका, सट्टक, शिल्पक, विलासिका, दुर्गमल्लिका, प्रस्थान, भाणिका, भाणी, गोष्ठी, हल्लीशक, काव्य, श्रीसिगदित, नाट्य रासक, पुस्तक, उल्लाप्यक, एवं प्रेक्षण

साहित्य दर्पण के अनुसार नाटक :→

→ किसी एक प्रसिद्ध आख्यान को लेकर लिखना चाहिए

→ नाटक में अनेक प्रकार के विकास, सुख, दुःख तथा अनेक रस होने चाहिए।

→ नाटक का नायक धीरोदात्त तथा प्रख्यात वंश का कोई प्रतापी पुरुष या राजर्षि होना चाहिए।

→ नाटक के प्रधान रस श्रृंगार एवं वीर हैं।

→ सन्धि स्थल में कोई विस्मयजनक व्यापार होना चाहिए।

काव्य नाटक :→

→ काव्य नाटक, नाटक और काव्य की मिश्रित विधा है

→ इसमें दोनों के तत्व समाहित रहते हैं।

→ हिन्दी में इसे गीति काव्य, काव्य नाटक, दृश्य काव्य आदि नामों से पुकारा जाता है।

→ इसमें अनुभूतियों का नाटकीय प्रकाशन होता है।

→ विषय-वस्तु काव्यात्मक एवं नाटकीय होती है।

→ इसके प्रमुख तत्व हैं - प्रस्तावना, कथा, संवाद, गीत एवं नर्तन

→ हिन्दी नाटक क्षेत्र में भारत भूषण का अग्निलोक प्रकाश दीक्षित का मृत्यु एवं धर्मवीर भारती का अंधा युग काव्य नाटक हैं।

Scanned with CamScanner